 **हिंदुस्तान में हिंदी   
  
हिन्दुस्तां में  हो गया, हिंदी का यह हाल।  
हिंदी मास बनाये हम , बिन चुके हर साल।।  
  
हिंदी का समरण हो, वर्ष में बस एक माह।  
बाकि पुरे वर्ष भर , हिंदी भर्ती आह।।  
  
अंग्रेज़ी का हो रहा , ऐसा भूत सवार ।  
सन्डे-सन्डे सब रटे , भूल गए रविवार।।  
  
अब बाबूजी मर गए, ज़िंदा होगये डैड ।  
आत्मीयता भी हो गयी, अंग्रेजी में कैद।।  
  
जो बोले हिंदी यहाँ , उसको समझे हिन्।  
अंग्रेज़ी के सामने , हिंदी की तौहीन।।  
  
माना अछि बात है, हर  का ज्ञान ।  
किन्तु खा तक उचित है , हिंदी का अपमान ||   
  
हिंदी के उपयोग में क्यों इतना संकोच ?  
किस भाषा में पाओगे ,हिंदी जैसा लोच।।**

**हिंदी तोह बनकर रहे , हर भाषा का ताज ।  
हमने इसके करदिया परिचय का मोहताज़।।  
  
क्यों ये हिंदी दिवस है , क्यों ये हिंदी मास।  
क्या हिंदी का रहेगा , बस इतना इतिहास।।  
  
हिंदी में बात करे, हिंदी में हो काम।  
तभी हिंदी पायेगी , सम्मानित स्थान।।**

**Neha Agarwal**

**CSE/16/059**